सं. भो.ति./करोद वाद 28-85/18546.--वृंकि हरियाणा के राज्यशत की राम है कि मैं। क्योरवैल इण्डिया लि०, मयुरा रोड, फरीदावाद, के श्रमिक श्री जय सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भी बौगिक विवाद है;

ग्रीर वृक्ति हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निविष्ट करना वाछनीय समझते हैं;

इसिल्ए, प्रव, प्रीवोगिक विवाद प्रिमिनियन, 1947, की धारा 10 की उपधारा (1) के ख्ष्य (ग) द्वारा प्रवान की गई शिक्तियों का प्रयोग करते हुने हुरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी प्रीवस्चना सं. 5415—38म/68/15254 दिनांक 20 जून, 1968, के साथ पढ़ते हुए अधिस्चना सं. 11495—जी—श्रम • 88—श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिनियम की घारा 7 के प्रधीन गठित अस न्याधालय, खरीदाबाद, को विचावप्रस्त या उत्तरे कुलंग्स या उत्तरे सम्बन्धित नीचे निखा मामला न्याय निर्णय के लिए निर्देष्ट करते हैं जो कि प्रबन्धकों तथा श्रीमक के बीच या तो विचावप्रस्त मामका है या विवाद से सुसंगत प्रयाद सम्बन्धित मामला है :— '

क्या श्री जय भिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

मं थ्रो. वि./फरीद:बाव/29-85/18553.--वृकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मै० के० को० प्रिटिंग मशीनज, मैन्यू० कं०, तिगाव रोड, बल्लबगढ़, के अमिक श्री अर्जुनदेव चोपड़ा सथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद निश्चित मामले में कोई पोखीगिक बिवाद है:

बोर बुंति हरियामा के राज्यसात विवाद को त्यायनिर्मेष हेत् निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं ;

इसिनए, प्रव. प्रोबोगिक विवाद प्रश्चितियम, 1947, की वारा 10 की उपवारा (1) के खण्ड (ग) हारा प्रचान की गई जाने गों का प्रयोग करते हुने, हिर समा के राज्यमान इसके हारा सरकारी प्रशिक्ष का 5416-3-अम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968, के ताब पढ़ने हुने प्रोबन्ना सं 11495-जो-अम/88-अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958, हारा एक्स प्रश्चितियम की शारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, करीदाबाद, की विवादपस्त या उससे सुतंगत या उससे सम्बन्धित मीचे लिखा मामक न्यायानविव के लिये निर्देश्य करते हैं, जो कि प्रवन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादपस्त मामला है या विवाद से चुसंगत सम्बन्धित सममला है:—

क्या भी धर्जुनदेव चोपड़ा की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है ?

सं. श्रो. वि./गुड़गांवा/22-85/18560.—चूंकि श्रुरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. एजमको मैटल वर्कस वसई रोड, गुड़गांव, के श्रमिक श्री राजेन्द्र सिंह तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामला में कोई श्रीकोणिक विवाद है;

भीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब भौद्योगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खन्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई बिनितयों का प्रयोग करत हुये, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415—3—अम-68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुये प्रधिसूचना सं. 11495—जी—अम 88—अम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1968 द्वारा उक्त अधिन नियम की धारा 7 के अधीन गठित अम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते है, जो कि उक्त अबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है:—

ं क्या श्री राजेन्द्र सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोचित संया ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकवार है?

सं. मो.बि./फ़रीवाबाद/40-85/18567.—चूंकि इरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. रेबोस्टोस प्रा० लि०, प्लाट नं० 112, सैक्टर-6 फरीदाबाद, के खर्मिक भी गुरदास हान्छा तथा उसके अवन्त्रकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामलेमें कोई मोधोनिक विवास है;

और चूंकि हरिवाणा में राज्यकास विकास को स्यावनिकेंग हेतू निर्विच्छ करका बांक्सीक समझते हैं है

इस लिए, प्रव. पीयोगिक विवाद प्रधिनियम, 1947 की धारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई बिस्तयों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपा र इसके द्वारा सरकारी प्रधिमूचना सं. 5415-3-अम-68/15254, दिशांक 20 जून, 1968, के साथ पहते हुए प्रधिमूचना सं. 11495-जी-अम-88-अम/57/11245, दिनांक 7 करवरी, 1958, हारा उदत ध्रधिनियम की धारा 7 के सकीन गठित अम न्यायानय, फरीदावाद की विवादशस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला ग्यायनिर्णय के लिए निविष्ट करते हैं, ओ कि प्रधन्धकों तथा अमिकों के बीच या तो विवादशस्त मामला है या विवाद से सुसंगत कर्षा मामला है:—

नया भी गुरुदास हान्डा की सेवाओं का समापन न्याबोचित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इक्यार है ?

सं. यो.वि./फरोदावार/44-85/18575.--चूंकि इरियाणा के राज्यपाल की राय है कि मैं. मोसवाल स्टींल प्लाट मं 263 सँग्डर-24, फरोदाबाद, के अनिक श्री बलबीर सिंह तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद जिखिल मामले में कोई भीबोगिक विवाद ,हैं ;

भीर जुंजि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को स्थायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इसलिये, मब, श्रीयोगिक दिवाद प्रजितियन, 1947, को घारा 10 को उग्धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई सांकरयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यात इसके द्वारा सरकारों प्रधिप्त वना सं. 5415-3%4/68/15254, दिनोंक 20 जून 1968, के साथपढ़ते हुए ग्रीधसूचना सं० 11495-जी-अम-88-अम/57/11245, दिनोंक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधितियम की खारा 7 के ग्रीवीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को दिवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा मामला न्यायितियम के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रयवा संबंधित मामला है :—

क्या श्री बलबीर सिंह की सेवाओं का समापन न्यायोजित तथा ठीक है ? यदि नहीं, तो वह किस राहत का इकदार है ?

सं भो. वि./फरीद बाद/212-84/18582--चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राय है कि 1. मैं. वर्धमान ितिना एण्ड जनरल मिल्ज, लि॰ (रोलिंग डिवीजन) प्लाटन॰ 264, सैक्टर-24, फरीदाबाद, 2. राम लगन ठेकेदार फरीदाबाद, के श्रमिक श्री भीम तथा उनके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौदोगिक विवाद है;

धोर चूंकि ह्रियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं;

इसलिये, ग्रव, ग्रोशोगिक विवाद ग्रिशिनियम, 1947 की धारा 10 की उप धारा (1) के छाट (ग) हुना प्रश्ने के गई कि निर्देशों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी ग्रिशिसूचना सं. 5415—3—श्रम/68/15254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए ग्रिश्सूचना सं 0 11495-जी-श्रम/88-श्रम/57/11245. दिनांक 7 फरवरी 1958 द्वारा उवत ग्रिशिनयम की धारा 7 के श्रशीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद, को विवादग्रस्त था उ से सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा भामचा न्यायनिर्णय के लिये निर्दिष्ट करते हैं, जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच था तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत भाषा संबंधित मामला है :—

क्या श्री हभीय की सेवाद्यों का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं तो वह किस राहत का हककार है?

सं. घो. वि./फरीदाबाद/ 70-85/18590. — चूंकि हरियाणां के राज्यपाल की राध है कि मै. एम॰ जी॰ साहनी, 12/1, मयुरा रिड, फरीदाबाद, के श्रमिक श्रीमती नुगीदेवी तथा उसके प्रबन्धकों के सध्य इसमें इसके साद लिखित मामले में कीई घौद्योगिक विवाद है:

धौर चंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं :

इस लिए, प्रच, श्रौद्योगिक विवाद सिंधिनियम, 1947 की घारा 10 की उपधारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई क्रिक्तियों का प्रयोग करते हुए, हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना लं. 5415—3श्रम/68/13254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495—जी—श्रम—88-श्रम/57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिनियम की घारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाधाद, की विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे संबंधित नीचे लिखा पामला व्यायनिर्णय के लिए निर्दिष्ट करते हैं, जी कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिकों के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा संबंधित मामला है:—

क्या श्री मती सुगीदेवी की सेवामों का समापन न्यायोचित तया ठीक है? यांद नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?